SMT. ARUNDHATI BHATTACHARYA

Smt. Arundhati Bhattacharya is a trailblazer in the Indian financial services sector and currently serves as the Chairperson and CEO of Salesforce South Asia. Widely recognized for her transformative leadership, she has played a pivotal role in shaping the landscape of the Indian banking and technology industries. Her visionary approach has not only strengthened India's financial ecosystem but also advanced the adoption of cutting-edge technologies to drive inclusive growth.

2. Born on 18th March, 1956, Smt. Bhattacharya did her schooling at St. Xavier's School (Bokaro Steel City) and then completed her graduation in English Literature from Lady Brabourne College, Kolkata, and pursued further studies at Jadavpur University. She began her illustrious career by joining the State Bank of India (SBI) as a probationary officer in 1977, rising through the ranks to become the first woman to chair the 210-year-old institution.

3. Smt. Bhattacharya spearheaded several groundbreaking initiatives during her tenure at SBI, including the successful merger of its associate banks, which was one of the largest consolidation efforts in the banking sector. The bank played a pivotal role in executing the Pradhan Mantri Jan-Dhan Yojana (PMJDY) program, a cornerstone of all financial inclusion initiatives. Under her leadership, SBI underwent a significant transformation, marked by enhanced operational efficiency, customer-focused innovation, and accelerated digitalization. Notably, the bank played a critical role in the successful implementation of Goods and Services Tax (GST), along with other major government programs. She also played a key role in advancing financial inclusion through initiatives such as the "SBI Buddy" mobile wallet and the "SBI Digital Village" program. Her forward-thinking approach positioned SBI as a leader in digital banking and earned her widespread acclaim as a reformist in the financial sector.

4. After her tenure at SBI, Smt. Bhattacharya brought her expertise to the technology sector by joining Salesforce India as Chairperson and CEO. In this role, she has been instrumental in driving Salesforce's growth in the region, fostering innovation and supporting India's digital transformation journey. Her leadership has enabled Indian businesses to leverage advanced technologies such as artificial intelligence and cloud computing, thereby enhancing productivity and global competitiveness.

5. Smt. Bhattacharya's autobiography, *Indomitable: A Working Woman's Notes on Work, Life, and Leadership,* offers an intimate and inspiring look into her journey, from growing up in Bhilai and Bokaro to becoming one of India's most influential business leaders. She is a vocal advocate for women in leadership. She has introduced impactful policies such as free cervical cancer vaccines for women employees and their wards and sabbatical leave for women employees to care for children and elderly family members. She is also a strong proponent of Al-driven digital transformation, seeing technology as a fundamental force for economic progress.

6. Smt. Bhattacharya's exemplary contributions have been recognized through numerous awards and honors. She was named among Forbes' "World's 100 Most Powerful Women" and Fortune's "50 Greatest Leaders." She has also been conferred the "Business Leader of the Year" award by multiple institutions.

श्रीमती अरुंधति भट्टाचार्य

श्रीमती अरुंधति भट्टाचार्य भारतीय वित्तीय सेवा क्षेत्र में एक अग्रणी महिला हैं और वर्तमान में सेल्सफोर्स साउथ एशिया की अध्यक्ष और कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) के रूप में कार्यरत हैं। अपने परिवर्तनकारी नेतृत्व के लिए व्यापक रूप से पहचानी जाने वाली श्रीमती भट्टाचार्य ने भारतीय बैंकिंग और प्रौद्योगिकी उद्योग के परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण ने न केवल भारत के वित्तीय इकोसिस्टम को मजबूत किया है, बल्कि समावेशी विकास को प्रोत्साहित करने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों के अंगीकरण को भी आगे बढ़ाया है।

2. 18 मार्च, 1956 को जन्मी, श्रीमती भट्टाचार्य ने सेंट जेवियर्स स्कूल (बोकारो स्टील सिटी) से स्कूली शिक्षा प्राप्त की और फिर लेडी ब्रेबॉर्न कॉलेज, कोलकाता से अंग्रेजी साहित्य में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और जादवपुर विश्वविद्यालय से आगे की पढ़ाई की। उन्होंने वर्ष 1977 में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) में प्रोबेशनरी ऑफिसर के रूप में शामिल होकर अपने शानदार करियर की शुरुआत की और विभिन्न पदों पर सेवा करते हुए 210 साल पुराने संस्थान की अध्यक्षता करने वाली पहली महिला बनीं।

3. श्रीमती भट्टाचार्य ने एसबीआई में अपने कार्यकाल के दौरान कई महत्वपूर्ण पहलें की, जिसमें इसके सहयोगी बैंकों का सफल विलय भी शामिल है, जो बैंकिंग क्षेत्र में सबसे बड़े समेकन प्रयासों में से एक था। बैंक ने प्रधानमंत्री जन–धन योजना (पीएमजेडीवाई) कार्यक्रम को कार्यान्वित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो सभी वित्तीय समावेशन पहलों की आधारशिला है। उनके नेतृत्व में, एसबीआई ने एक महत्वपूर्ण परिवर्तन किया, जिसकी विशेषता बढ़ी हुई परिचालन दक्षता, ग्राहक–केंद्रित नवाचार और त्वरित डिजिटलीकरण है। बैंक ने उल्लेखनीय रूप से अन्य प्रमुख सरकारी कार्यक्रमों के साथ–साथ वस्तु और सेवा कर (जीएसटी) के सफल कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने "एसबीआई बडी" मोबाइल वॉलेट और "एसबीआई डिजिटल विलेज" कार्यक्रम जैसी पहलों के माध्यम से वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण ने एसबीआई को डिजिटल बैंकिंग में अग्रणी के रूप में स्थापित किया और उन्होंने वित्तीय क्षेत्र में सुधारवादी के रूप में व्यापक प्रशंसा अर्जित की।

4. एसबीआई में अपने कार्यकाल के बाद, श्रीमती भट्टाचार्य ने सेल्सफोर्स इंडिया में चेयरपर्सन और कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) के रूप में शामिल होकर प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता का उपयोग किया। इस भूमिका में, उन्होंने क्षेत्र में सेल्सफोर्स के विकास को आगे बढ़ाने, नवाचार को बढ़ावा देने और भारत की डिजिटल परिवर्तन यात्रा का सहयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके नेतृत्व ने भारतीय व्यवसायों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी उन्नत तकनीकों का लाभ उठाने में सक्षम बनाया है, जिससे उत्पादकता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई है।

5. श्रीमती भट्टाचार्य की आत्मकथा, इंडोमिटेबलः ए वर्किंग वूमन्स नोट्स ऑन वर्क, लाइफ, एंड लीडरशिप, भिलाई और बोकारो में उनके पलने–बढ़ने से लेकर भारत की सबसे प्रभावशाली बिजनेस लीडर बनने तक की उनकी यात्रा पर एक गहरी और प्रेरक दृष्टि डालती है। वह महिला नेतृत्व की मुखर समर्थक हैं। उन्होंने महिला कर्मचारियों और उनके बच्चों के लिए मुफ़्त सर्वाइकल कैंसर के टीके और महिला कर्मचारियों को बच्चों और परिवार के बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल के लिए विश्राम अवकाश जैसी प्रभावशाली नीतियाँ शुरू की हैं। वह एआई–संचालित डिजिटल परिवर्तन की भी एक पुरजोर समर्थक हैं, जो प्रौद्योगिकी को आर्थिक प्रगति के लिए एक बुनियादी शक्ति के रूप में देखती हैं।

6. श्रीमती भट्टाचार्य के अनुकरणीय योगदान को कई पुरस्कारों और सम्मानों के माध्यम से मान्यता मिली है। उन्हें फोर्ब्स की "दुनिया की 100 सबसे शक्तिशाली महिलाओं" और फॉर्च्यून की "50 महानतम नेताओं" में शामिल किया गया था। उन्हें कई संस्थानों द्वारा "बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर" पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।